संचार का अर्थ

संचार के प्रकार

मीडिया एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध

जनसंचार के साधनों का महत्व

यह सर्वविदित है कि समाज मनुष्य के रहन-सहन की सम्भावनाओं और मिल-जुल कर सामान्य रुचि के काम पर आधारित है जिसे सहयोग कह सकते हैं। लेकिन बिना संचार सहयोग सम्भव नहीं है। संचार के द्वारा मनुष्य ज्ञान, सूचना और अनुभव को आपस में बाटता है। एक-दूसरे के साथ साझेदारी करता है और इस प्रकार वह अपने संगी-साथी को समझता उनका विश्वास प्राप्त करता अथवा उन्हें नियंत्रित करता है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए संचार का अर्थ हुआ भाव विचार या संदेश की ऐसी अभिव्यक्ति या ऐसा आदान-प्रदान जो भाव, विचार या संदेश को ग्रहण करने वाले के भीतर किसी प्रतिक्रिया को जन्म दे। संचार शब्द का अर्थ है चलना, इसकी उत्पत्ति संस्कृत भाषा के चर धातु से हुई है जिसके आशय किसी बात को आगे बढ़ाने से या फैलाने से हैं। अंग्रेजी में इसे Communication कहते हैं। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के Communicare क्रिया से हुई है जिसका अर्थ To talk together, confer, discourse and consult, one with another, यह लीटिन शब्द Communitas से गहराई तक सम्बद्ध है जिसका अर्थ न केवल Community है बल्कि मनुष्य का एक दूसरे के साथ व्यवहार भाई-चारा, मैत्रीभाव, साझेदारी या सहभागिता और न्याय परायण भी है। संचार के स्थान पर कभी-कभी सम्प्रेषण शब्द भी प्रयोग किया जाता है। गूढ़ता से किया गया अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि Communication के लिए संचार शब्द ही उपयुक्त है क्योंकि सम्प्रेषण में भाव अथवा

विचारों की के प्रेषण की एक तरफा प्रक्रिया का ही ज्ञान होता है जबकि संचार में दोनों ओर के सम्प्रेषण का।

इस प्रकार संचार का तात्पर्य अपने भाव, विचार या सदेश की उस अभिव्यक्ति आदान-प्रदान या सम्प्रेषण से है जो प्राप्तकर्ता में प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। निःसन्देह संचार व्यक्ति के मध्य दो तरफा प्रक्रिया है। यह एक मूलभूत वेयक्तिक और सामाजिक आवश्यकता और सार्वभौम मानवाधिकार है। संचार के बिना जीवन अर्थहीन नीरस और उद्देश्यहीन लगता है। शिक्षा के संदर्भ में कहा जाये तो इसके अभाव में शिक्षा प्रक्रिया अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकती।

जनसंचार के माध्यम-

आधुनिक काल में जनसंचार के माध्यम निम्नलिखित हैं-

1. शब्द संचार माध्यम-समाचार, पत्रिकाएं, पुस्तकें आदि।
2. श्रवण संचार माध्यम-रेडियो ऑडियो, कैसेट, सीडी, टेपरिकार्डर आदि।
3. दृश्य श्रव्य संचार माध्यम-टेलीविजन, वीडियो कैसेट, फिल्म आदि।
4. सांस्कृतिक संचार माध्यम-रामलीला, नाटक, स्वांग, कठपुतली, लोकभीत आदि।
5. अन्य आधुनिक संचार माध्यम-उपग्रह, इंटरनेट, कम्प्यूटर आदि।

उपर्युक्त इन सभी माध्यमों की अपनी विशेषतायें हैं। इनका कुछ संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

शब्द संचार माध्यम की विशेषताएं-

1. पत्र-पत्रिकार्य विचारक, वक्ता अथवा लेखक का विचार हैं। इनके माध्यम में किसी विचारक वक्ता, और लेखक के विचार पाठकों (छात्र- छात्राओं, अध्यापक आदि) तक पहुंचाये जा सकते हैं।
2. इसके माध्यम से पाठकों को विषय की सम्पूर्ण और विस्तृत जानकारी होती है।
3. इसका प्रयोग व्यक्ति अपनी सुविधानुसार जब चाहे और जहां चाहे कर सकता है।
4. इसका प्रयोग एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा अर्थात् कई लोग कर सकते हैं।
5. ये शिक्षा के सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है।
6. इनके माध्यम से पाठकों को देश-विदेश की जानकारी प्राप्त होती, है उनका
7. दृष्टिकोण विकसित होता है। ये जीवन की वास्तविकता से परिचित होते हैं।

दृश्य-श्रव्य संचार माध्यम की विशेषतायें

1. दृश्य-श्रव्य संचार के माध्यम से व्यक्ति देख और सुनकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है।
2. देश-विदेश की नवीन तकनीक का ज्ञान उसे इसके माध्यम से तुरन्त हो जाता है।
3. कम्प्यूटर, उपग्रह, इन्टरनेट के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान की बाते तुरन्त पता चल जाती है।
4. व्यक्ति इन सब के माध्यम से दूर होते हुए पास हो जाता है जो शिक्षा में सहायक हो सकता है।
5. इससे प्राप्त ज्ञान त्वरित और व्यापक होता है।

जनसंचार के साधनों का महत्व

1. जनसमूहों को नवीन सूचनायें देना- जनसंचार के साधन व्यक्तियों को नर्वीन सूचनायें देने के साथ उनका मनोरंजन भी करते हैं। इस कथन का समर्थन करते हुए एडवर्ड विल्गेन ने अपने विचार कुछ इस प्रकार से व्यक्त किये हैं। अधिकतर नवयुवक लोग वास्तव में अधिकतर अध्यापक की अवश्यमेव कुछ समय किसी प्रकार के समूह साधनों के साथ लगायेगे और कुछ चुनाव करने पर इन समूह साधनों में कुछ वस्तुएं ऐसी मिलती हैं जो समसामयिक, सजीव और मनोरंजनकारी होती है।

इस लक्ष्य के अन्तर्गत दो अन्य लक्ष्य हैं।

(i) **सामाजिक सूचनाये देना-** इनके साधन टी.वी., समाचार-पत्र, इंटरनेट, चलचित्र, रेडियो आदि हैं।

(ii) समाज को जागरुक बनाना- ये सामाजिक तथा मानवीय भावनाओं को जाग्रत करते हैं। जैसे-नाटक, चलचित्र, पुस्तकालय, संग्रहालय, समाज कल्याण समितिया आदि।

2. मनोरंजन करना- इन साधनों के माध्यम से शिक्षा देने के अतिरिक्त मनोरजन भी होता है। जैसे रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर, इंटरनेट, चलचित्र आदि

3. व्यावसायिक शिक्षा देना- इन साधनों के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा भी दी जा सकती है। जैसे रेडियो, टी.वी. में किसानों के लिए कार्यक्रम आते हैं।

जनसंचार के उन्हीं साधनों की उपयोगिता मानते हैं जिनमें निम्न गुण हो :

(i) भाषा सम्बन्धी रुकावट न हो।

(ii) लोग सरलता से नया ज्ञान प्राप्त कर सकें।

(iii) संदेश जन साधारण तक पहुंच सके।

(iv) लोगों को बास्तव में शिक्षित करें।

(v) कम आय में अधिक लोगों को ज्ञान दिया जा सके।

जनसंचार के साधन एक पूरे समूह को शिक्षित करने में सहायता करते हैं। ये साधन एक ही समय में बहुत से व्यक्तियों को शिक्षित करने में सफल होते हैं। अनेक लोग इन साधनों की सहायता से ज्ञान और सूचनाएं एकत्र करते हैं। **ब्लान्ड्स इनसाइक्लोपीडियो आफ एजूकेशन** में लिखा है कि, "जनसंचार के साधनों में सामान्य तौर पर समाचार पत्रों, टी. वी. रेडियो, उच्चस्तरीय संगीत, चलचित्रों, विज्ञापनों, प्रहसनों, पत्रिकाओं और कागजों जिल्दवाली पुस्तकों के अर्थ में लिख जाते हैं जो समूह के बाजार का लक्ष्य रखते हैं।"

अन्त में यह कहा जा सकता है कि सूचना और संचार का तात्पर्य एक ऐसी कला व प्रक्रिया से है जिसके द्वारा दो या अधिक लोग अंपने विचारों, तथ्यों, भावनाओं, प्रभावों आदि को इस प्रकार विनयमित करते हैं कि सूचना प्राप्त करने वाला व्यक्ति संदेश के अर्थ, उद्देश्य तथा उपयोग को भली-भांति समझं लेता है।

जनसचार के साधन ज्ञानात्मक एवं सूचना प्रदानकारी होते हैं। किस प्रकार की और कितनी मात्रा में शिक्षा मिलती है यह विशेष तौर से लोगों के पूर्व ज्ञान, अनुभव और आवश्यकता पर निर्भर करता है जो व्यक्ति जिस कार्य या विचार से किसी साधन का प्रयोग करता है वैसे ही उस शिक्षा प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए कुछ लोग टी.वी. मनोरंजन के लिए देखते हैं। कुछ लोग राजनीतिक सूचनाओं और अन्य जानकारी के लिए। इस प्रकार स्पष्ट है कि सूचना के समूह साधन शिक्षा के अनौपचारिक साधनों के रूप में शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

शिक्षाशस्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य

- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi

- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन
- राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता का सम्बन्ध | भारत में राष्ट्रीय एकता का संकट | निवारण हेतु कोठारी आयोग के सुझाव
- राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं | शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय
- मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन | Describe the role of family in the development of value education in Hindi
- मूल्य शिक्षा का अर्थ | मूल्य शिक्षा की आवश्यकता | मूल्य शिक्षा की अवधारणा
- भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है? | बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?
- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ | पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम
- भावात्मक एकता के लिए भावात्मक एकता समिति द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ | राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए उपाय | राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका
- भावात्मक एकता का अर्थ | भावात्मक एकता के स्तर | भावात्मक एकता के विकास में शिक्षा के कार्य | राष्ट्रीय एकता भावात्मक एकता के सम्बन्ध

sarkariguider.com
sarkariguider.com
sarkariguider.com